गरवी गुजरात

PRGI No. GUJHIN/2011/39228

गरवी गुजरात

PUBLISHED HINDI DAILY FROM AHMEDABAD

वर्ष : 16
अंक : 036
दि. 05.06.2026,
शुक्रवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी आगामी 5 जून को सूरत की यात्रा पर, दक्षिण गुजरात को देंगे 18 हजार करोड़ रुपए से अधिक के विकास कार्यों की भेंट

▸▸ एनएचएआई तथा ऊर्जा एवं पेट्रोकेमिकल्स विभाग (ईपीडी) के अंतर्गत 16,968 करोड़ रुपए के भारत सरकार के प्रोजेक्ट्स का होगा लोकार्पण तथा शिलान्यास

▸▸ राज्य के विभिन्न विभागों के अंतर्गत 1800 करोड़ रुपए से अधिक के गुजरात सरकार के प्रोजेक्ट्स का लोकार्पण एवं शिलान्यास किया जाएगा

▸▸ 7689 रुपए करोड़ की लागत से निर्मित वडोदरा-मुंबई एक्सप्रेसवे (पैकेज VI एवं VII) का लोकार्पण

▸▸ 1000 करोड़ रुपए से अधिक के खर्च से जीआईडीसी के 8 विकास कार्यों का लोकार्पण

16,968 करोड़ रुपए के भारत सरकार के 7 प्रोजेक्ट्स का लोकार्पण तथा शिलान्यास

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी आगामी 5 जून को सूरत से 16,968 करोड़ रुपए के भारत सरकार के 7 प्रोजेक्ट्स का लोकार्पण तथा शिलान्यास करेंगे। इन प्रोजेक्ट्स में नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया (एनएचएआई) के 4 प्रोजेक्ट्स का शिलान्यास, 2 प्रोजेक्ट्स का लोकार्पण तथा ऊर्जा एवं पेट्रोकेमिकल्स विभाग (ईपीडी) के 1 प्रोजेक्ट का लोकार्पण शामिल है।

एनएचएआई अंतर्गत 7689 करोड़ रुपए की लागत से वडोदरा-मुंबई एक्सप्रेसवे (पैकेज VI एवं VII) का लोकार्पण किया जाएगा। इसके अतिरिक्त; 4732 करोड़ रुपए की लागत से एनएचएआई के अन्य 4 प्रोजेक्ट्स का शिलान्यास भी किया जाएगा, जिनमें एनएच-56 (पैकेज 4) पर धमासिया से मोवी तक फोर लेनिंग, एनएच-56 (पैकेज 6) पर नसारपोर से मलोथा तक फोर लेनिंग, सूरत-हजीरा नेशनल हाईवे (एनएच-53) पर चेनेज 11.22 पर वीयूपी अर्थात व्हीकल अंडरपास (रिलायंस) तथा चेनेज 14.41 पर वीयूपी कम फ्लायओवर (कावास) शामिल हैं। साथ ही, ऊर्जा एवं पेट्रोकेमिकल्स विभाग (ईपीडी) अंतर्गत 4547 रुपए करोड़ की लागत से गुजरात में ट्रांसमिशन नेटवर्क का विस्तार किया जाएगा।

1800 करोड़ रुपए से अधिक के गुजरात सरकार के विभिन्न 19 प्रोजेक्ट्स का लोकार्पण तथा शिलान्यास

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी आगामी 5 जून, 2026 को राज्य के विभिन्न विभागों के अंतर्गत 1810 करोड़ रुपए के 19 प्रोजेक्ट्स का लोकार्पण और शिलान्यास करेंगे। इन प्रोजेक्ट्स में ऊर्जा एवं पेट्रोकेमिकल्स, शहरी विकास, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, जीआईडीसी, सड़क एवं भवन, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, आदिजाति विकास तथा पंचायत विभाग के विकास कार्य शामिल हैं। गुजरात सरकार के इन प्रोजेक्ट्स में जीआईडीसी अंतर्गत 1063.43 करोड़ रुपए की लागत से 8 प्रोजेक्ट्स का लोकार्पण किया जाएगा, जिनमें भरूच और वलसाड में विभिन्न इन्फ्रास्ट्रक्चर संबंधी कार्य शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग अंतर्गत सूरत में रीजनल साइंस सेंटर का शिलान्यास, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग अंतर्गत ओल्ड सिविल हॉस्पिटल कैंपस में 100 बेड्स वाले सब-डिस्ट्रिक्ट हॉस्पिटल तथा 50 बेड्स वाले आयुष हॉस्पिटल का लोकार्पण, सड़क एवं भवन विभाग अंतर्गत बोरदा-सातकाशी-शेरूला रोड का लोकार्पण, पंचायत विभाग अंतर्गत डांग जिला पंचायत कार्यालय के नए भवन का लोकार्पण और शहरी विकास विभाग अंतर्गत साउथ-वेस्ट अठवा जोन क्षेत्र में स्थित भटार सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट में कन्वेंशनल एक्टिवेटेड स्लज प्रोसेस के तहत 90 एमएलडी क्षमता वाले सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट के अपग्रेडेशन कार्य और वापी स्टॉर्म वॉटर ड्रेन (एसडब्लूडी) का लोकार्पण किया जाएगा।

उल्लेखनीय है कि गत 26 मई, 2026 को श्री नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री के रूप में कार्यकाल के 12 वर्ष पूर्ण हुए हैं। इन 12 वर्षों में प्रधानमंत्री के नेतृत्व में गुजरात प्रत्येक क्षेत्र में अभूतपूर्व विकास का साक्षी बना है। प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन तथा मुख्यमंत्री के नेतृत्व में गुजरात विकसित गुजरात से विकसित भारत@2047 के विजन को साकार करने के लिए प्रतिबद्ध है।

गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी आगामी 5 जून, 2026 अर्थात विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर गुजरात के सूरत की यात्रा पर आ रहे हैं। इस यात्रा के दौरान वे दक्षिण गुजरात अंचल को 18,777 करोड़ रुपए के विभिन्न विकास कार्यों की भेंट देने जा रहे हैं। प्रधानमंत्री सूरत से भारत सरकार तथा गुजरात सरकार के विभिन्न 24 प्रोजेक्ट्स का लोकार्पण एवं शिलान्यास करेंगे, जिनमें 4852 रुपए करोड़ की लागत वाले 5 प्रोजेक्ट्स का शिलान्यास तथा 13,926 करोड़ रुपए की लागत वाले 19 प्रोजेक्ट्स का लोकार्पण किया जाएगा। इस अवसर पर गुजरात के मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल भी उपस्थित रहेंगे।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की वर्चुअल उपस्थिति में अहमदाबाद में प्रथम वर्ल्ड योगासन चैंपियनशिप-2026 का शुभारंभ

गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अहमदाबाद में आयोजित प्रथम वर्ल्ड योगासन चैंपियनशिप-2026 का गुरुवार को वर्चुअल शुभारंभ कराते हुए कहा कि अहमदाबाद की धरती से विश्व खेलकूद के इतिहास में एक नया अध्याय जुड़ा है। उन्होंने विश्व के विभिन्न देशों से चैंपियनशिप में भाग लेने आए सभी खिलाड़ियों का भारत की धरती पर स्वागत करते हुए शुभकामनाएँ दीं।

प्रधानमंत्री ने कहा कि यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज सिटी के रूप में पहचाना जाने वाला अहमदाबाद शहर इस ऐतिहासिक आयोजन का मेजबान बना है, जो समग्र देश के लिए गौरव का विषय है। उन्होंने जोड़ा कि 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाएगा और उससे पहले आयोजित हो रही वर्ल्ड योगासन चैंपियनशिप स्वास्थ्य एवं कल्याण के 'डबल डोज' के समान है।

प्रधानमंत्री ने स्मरण कराया कि लगभग एक दशक पहले भारत ने संयुक्त राष्ट्र संघ में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का प्रस्ताव प्रस्तुत किया था, जिसे 190 देशों का समर्थन प्राप्त हुआ था। आज करोड़ों लोग योग, ध्यान और प्राणायाम को अपने दैनिक जीवन का हिस्सा बना रहे हैं, जो प्रसन्नता की बात है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि प्रत्येक जीवंत परंपरा समय के साथ नए चरण में प्रवेश करती है और वर्ल्ड योगासन चैंपियनशिप उसी नए चरण की शुरुआत है। यह प्रतियोगिता योगासन को प्रतिस्पर्धात्मक खेल के रूप में वैश्विक पहचान दिलाएगी। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि भविष्य में योगासन ओलंपिक्स सहित अंतरराष्ट्रीय खेलोत्सवों में भी अपना स्थान बना सकेगा और अहमदाबाद में आयोजित यह प्रथम चैंपियनशिप इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। उन्होंने कहा कि हर बड़े खेल क्षेत्र के साथ एक विशाल इकोसिस्टम विकसित होता है, जो रोजगार तथा कॅरियर के नए अवसरों का सृजन करता है। योगासन स्पोर्ट्स के विस्तार के साथ खिलाड़ियों, ट्रेनर्स, स्पोर्ट्स साइंटिस्ट्स, शोधकर्ताओं और इवेंट मैनेजर्स के लिए भी नई संभावनाएँ उत्पन्न होंगी। इस वर्ष अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की थीम 'योगा फॉर हेल्दी एजिंग' होने का उल्लेख करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि आज के समय में लोग लंबे समय तक स्वस्थ एवं सक्रिय रहने के सरल उपाय खोज रहे हैं, जिसमें योग सबसे योग्य विकल्प है। योग भोग एवं रोग दोनों से मुक्ति दिलाता है और कम खर्च में स्वस्थ जीवनशैली अपनाने का श्रेष्ठ मार्ग है। उन्होंने 'हर रोज योग, भगाएगा सारे रोग' का मंत्र भी दिया।

श्री मोदी ने कहा कि इस विचार को आगे बढ़ाने के लिए केंद्र सरकार के आयुष मंत्रालय द्वारा 'योगा श्री सिक्स्टी फाइव' अभियान प्रारंभ किया गया है। उन्होंने चैंपियनशिप में भाग लेने वाले खिलाड़ियों से अपने-अपने देशों में लौटकर योग के संदेश के वैश्विक दूत बनने का अनुरोध किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि इस प्रतियोगिता में विजय किसी की भी हो, लेकिन इतिहास के इस महत्वपूर्ण अध्याय का हिस्सा बनकर सभी खिलाड़ी पहले से ही चैंपियन बन चुके हैं। उनकी प्रतिभा और अनुशासन विश्वभर के युवाओं को प्रेरित करेंगे।

सत्यमेव जयते
Government of India

ESIC SOCIAL SECURITY

2026-2027
श्रमिक कल्याण, सामाजिक सुरक्षा एवं राष्ट्र निर्माण हेतु समर्पित

गुजरात के कामगारों के लिए स्वास्थ्य सेवाएं हुई सशक्त

सूरत के श्रमिकों हेतु सामाजिक सुरक्षा के नए अध्याय की शुरुआत

नरेंद्र मोदी
प्रधानमंत्री

220-बिस्तरों वाले ईएसआईसी अस्पताल सूरत, गुजरात

का उद्घाटन

नरेंद्र मोदी
प्रधानमंत्री
(विडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से)

के द्वारा

प्रमुख विशेषताएं

आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं से सुसज्जित

क्षेत्र के लगभग **3.2 लाख बीमित श्रमिकों** और उनके परिवार को लाभ

8.60 एकड़ में विस्तृत, 24x7 आपातकालीन सेवाओं के साथ, सुविधाजनक स्थान पर स्थित

सर्जरी, जनरल मेडिसिन, स्त्री रोग, बाल रोग, ईएनटी, नेत्र रोग, दंत चिकित्सा, रेडियोलॉजी सहित समग्र स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध

अधिक जानकारी के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें

शुक्रवार, 5 जून 2026
सायं 4:15 बजे

उद्घाटन समारोह का सीधा प्रसारण **डीडी न्यूज** पर होगा।

अधिक जानकारी के लिए देखें: https://www.esic.gov.in/ या टोल-फ्री नंबर 1800-11-2526 पर कॉल करें

संपादकीय

खाक हुई जिंदगियां

दिल्ली में मालवीय नगर स्थित एक होटल में हुए अग्निकांड के बाद भले ही गैर इरादतन हत्या का मामला दर्ज कर लिया गया हो, लेकिन सवाल है कि अग्निकांड में मरे लोगों का जीवन कौन लौटाएगा? आखिर देश की राजधानी में अकसर होने वाले अग्निकांडों का सिलसिला कब और कैसे खत्म होगा? क्या इस आपराधिक लापरवाही की जवाबदेही तय होगी? एक बार फिर अंधे लालच और आंख मूंदे तंत्र की लापरवाही से बुधवार को एक होटल में लगी भीषण आग में 21 लोगों की मौत हो गई। अभी भी कई लोग जिंदगी और मौत के बीच झूल रहे हैं। मरने वालों का आंकड़ा बढ़ने की आशंका भी जतायी जा रही है। घटना ने एक बार फिर होटल, गेस्टहाउस और रेस्तरां संचालन की निगरानी करने वाली व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। विडंबना देखिए कि मरने वालों में अधिकांश विदेशी लोग भी हैं, जो सस्ता इलाज कराने भारत आए थे। एक ही परिवार के आठ लोगों के अग्निकांड का शिकार होना बेहद दुखद है। विडंबना देखिए कि जिस एक मंजिला भवन को छह कमरों का गेस्ट हाउस चलाने की अनुमति मिली थी, वहां शासन-प्रशासन की नाक के नीचे एक छह मंजिला होटल बना दिया गया, जिसमें 26 कमरे और रेस्टोरेंट संचालित किया जा रहा था। जिसमें अस्सी से सौ लोगों की मौजूदगी बतायी जा रही है। निश्चित रूप से यह महज आग से जुड़ा हादसा नहीं है बल्कि होटल संचालन से जुड़े नियमों की अनदेखी, निगरानी करने वाले विभागों की लापरवाही और तंत्र की विफलता का परिचायक है। लेकिन गाहे-बगाहे होने वाले अग्निकांडों के बावजूद तंत्र की काहिली बदस्तूर जारी है। जांच के दायरे में घटना के बाद फरार होटल मालिक ही नहीं, बल्कि वे अधिकारी भी जिम्मेदार हैं जिन्होंने इसको संचालित करने के नियमों का अनुपालन नहीं किया और भवन निर्माण की स्वीकृति व उपयोग की अनुमति दी। यह जानते हुए भी कि होटल में निकासी का मार्ग बेहद संकरा है और अग्निशमन की पर्याप्त व्यवस्था उपलब्ध नहीं हैं।

दिल्ली के होटल में हुए अग्निकांड के बारे में बताते हैं कि आपातकालीन निकासी के अभाव व सुरक्षा मानकों का पालन न होने से ज्यादा मौतें हुई। धुंआ निकलने की पर्याप्त व्यवस्था न होने के कारण भी ज्यादा लोग दम घुटने से मौत के मुंह में समा गए। आखिर प्रशासन के अधिकारियों ने यह क्यों नहीं देखा कि स्वीकृत क्षमता से चार गुना विस्तार कर लिया गया है। गेस्ट हाउस के निर्माण में तमाम लाइसेंस शर्तों का घोर उल्लंघन हुआ। आपातकालीन निकासी की व्यवस्था न होने के कारण लोग अपनी जान बचाने के लिये, बदहवासी में ऊपरी मंजिलों से कूदते नजर आए। होटल के बाहर फैले बिजली के तार और अग्निकांड में हुई व्यापक क्षति बताती है कि विद्युत सुरक्षा मानकों का भी पालन ठीक से नहीं हुआ। जाहिर बात है कि गेस्ट हाउस से होटल बनाने से, उपयोग में हुए बदलाव की निगरानी की जिम्मेदारी स्थानीय नगर निकाय की होती है। यदि वर्षों से यह अवैध रूप से संचालित था, तो जांच व कार्रवाई क्यों नहीं की गई। यदि इसकी अग्नि सुरक्षा को लेकर एनओसी जारी की भी गई थी तो उसके बाद निरीक्षण व नियमों का अनुपालन क्यों सुनिश्चित नहीं किया गया? जाहिर बात है कि लाइसेंस प्राप्त करने वाले होटलों व रेस्टोरेंट की नियमित जांच करके इनके मालिकों की जवाबदेही भी सुनिश्चित की जानी चाहिए थी। क्यों किसी भी विभाग ने निरीक्षण व कार्रवाई की जहमत नहीं उठायी? क्या निरीक्षण करने वाले अधिकारी ले-देकर खामोश होकर बैठ गए? विडंबना देखिए कि बेसमेंट में कमरे,किचन बना दिए गए, लेकिन वेंटिलेशन व इमरजेंसी एग्जिट का कोई प्रावधान नहीं था। जिससे होटल धुंआ निकासी की चिमनी बनकर रह गया और तमाम लोगों की दम घुटने से मौत हो गई। बताते हैं कि आरोपी होटल मालिक आसपास में ही कुछ पार्टनरों के साथ मिलकर तीन होटल संचालित कर रहा था और सब ही जगह आपराधिक लापरवाही नजर आई। मोटे मुनाफे के लिये लोगों की जिंदगी से खिलवाड़ किया जा रहा था। लेकिन स्थानीय प्रशासन व जवाबदेह विभाग बेपरवाह बने रहे। निश्चय ही यह स्थिति सख्त कार्रवाई के बाद बदलनी चाहिए।

प्रकृति के बदलते मिजाज को लेकर गंभीरता जरूरी

> पश्चिमी मॉडल पर आधारित विकास योजनाओं से पर्यावरण का संतुलन बिगड़ रहा है। कॉर्पोरेट दुनिया के स्वार्थ को बढ़ावा देने के चलते प्रदूषण बढ़ने से ग्लोबल वॉर्मिंग, जलस्रोतों व जंगलों का विनाश आदि समस्याएं बढ़ीं। जिनका असर जीवन व स्वास्थ्य पर हुआ। प्रकृति के उतार-चढ़ाव मानवता के लिए चेतावनी हैं।

महात्मा गांधी ने वर्ष 1928 में ही उत्पादन और खपत के पश्चिमी मॉडल के चलते वैश्विक स्तर पर पर्यावरणीय असंतुलन की चेतावनी देते हुए कहा था—'ईश्वर कभी नहीं चाहता कि भारत कभी पश्चिम की तरह औद्योगिकीकरण अपनाए।' साथ ही कहा था कि 'एक छोटे से द्वीप साम्राज्य (इंग्लैंड) के आर्थिक साम्राज्यवाद ने आज दुनिया को जंजीरों से जकड़ रखा है। यदि तीस करोड़ की आबादी वाले देश ने ऐसा आर्थिक शोषण किया तो पूरी दुनिया टिड्डियों की तरह बेकार हो जाएगी।'

गांधीजी का मानना था कि देश को आज़ादी के बाद गरीबी दूर करने और लोगों के सम्मानजनक जीवनयापन की दृष्टि से आर्थिक विकास करना ही होगा। ऐसे में भारत को अपने प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग में कहीं अधिक जिम्मेदारी दिखानी होगी और पर्यावरण को कम से कम नुकसान पहुंचाना होगा। दुखद है कि आज़ाद भारत की सरकारों ने गांधी के विचारों को पूरी तरह बिसरा दिया। परिणामस्वरूप, जहां मानव जीवन प्रभावित हुआ, वहीं संसाधनों पर कॉर्पोरेट घरानों के कब्जे से ग्रामीण और आदिवासी समाज बेदखली का शिकार हुआ। साथ ही औद्योगिक परियोजनाओं को प्रोत्साहन देने के कारण प्रदूषण की समस्या ने भयावह रूप ले लिया।

इस तबाही के विरोध में देश में चिपको, नर्मदा और मछुआरों के आंदोलन सामने आए। इसके उपरांत देश में पर्यावरण मंत्रालय की स्थापना हुई और पारिस्थितिक नुकसान रोकने के लिए अनेक कानून बने। लेकिन सत्ता पर काबिज विभिन्न सरकारों ने समाज के व्यापक हित के बजाय निजी कॉर्पोरेट घरानों के हितों को सर्वोपरि मानकर उनके आगे झुकना उचित समझा। कॉर्पोरेट घरानों के निजी स्वार्थ के चलते प्रदूषित शहर, भयावह स्तर तक प्रदूषित वातावरण, मरती जीवनदायी नदियां, प्रदूषित जल, प्रदूषित वायु, गिरता भूजल स्तर, खत्म होते जलस्रोत व जंगल, प्रदूषित मिट्टी, बंजर होती जमीन आदि पर्यावरण विनाश और तबाही के स्पष्ट सबूत हैं। इसका सीधा असर मानव स्वास्थ्य पर पड़ रहा है। इसके बावजूद यह सिलसिला बेरोकटोक जारी है।

वैश्विक स्तर पर देखें तो बीस वर्ष पहले हम सालाना आठ अरब मीट्रिक टन कार्बन वायुमंडल में छोड़ रहे थे, जिसका आंकड़ा बढ़कर आज डेढ़ गुणा से भी अधिक हो गया। इसके कारण धरती का तापमान लगातार बढ़ता जा रहा है। आज दुनिया में ग्लोबल वार्मिंग की चर्चा जोरों पर है। प्रकृति का मिजाज बदल रहा है, और इसमें जलवायु परिवर्तन ने अहम भूमिका निभाई है। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के कार्यकारी निदेशक का कहना है कि दुनिया में ऊर्जा की जरूरत पूरी करने के लिए कोयला, तेल और गैस का अधिक इस्तेमाल हो रहा है। भारत के संदर्भ में ब्राउन टू ग्रीन रिपोर्ट के अनुसार जलवायु परिवर्तन रोकने के भारत के प्रयास अभी भी नाकाफी हैं। भारत ने 2030 तक ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन की तीव्रता में 33-35 प्रतिशत तक कमी लाने का ऐलान किया था, लेकिन पेरिस समझौते के मुताबिक डेढ़ डिग्री के लक्ष्य के हिसाब से यह पर्याप्त नहीं है। देश को विभिन्न क्षेत्रों के लिए अपने उत्सर्जन लक्ष्य नए सिरे से तय करने की आवश्यकता है, अन्यथा 2095 तक धरती का तापमान चार डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाएगा।

यदि कार्बन उत्सर्जन में कमी न आई तो जल संकट बढ़ेगा, बीमारियां बढ़ेंगी, खाद्यान्न उत्पादन में कमी आएगी, ध्रुवों की बर्फ तेज गति से पिघलेगी, समुद्र का जलस्तर तेजी से बढ़ेगा। नतीजन, दुनिया के कई देश पानी में डूब सकते हैं। समुद्र किनारे बसे सैकड़ों शहर-महानगर जलमग्न होंगे, और लगभग 20 लाख से अधिक प्रजातियां सदा-सदा के लिए खत्म हो जाएंगी। वहीं, सदियों से जीवन के आधार रहे खाद्य पदार्थों के पोषक तत्व कम हो जाएंगे। विशेष रूप से बी-1, बी-2, बी-5 और बी-8 जैसी विटामिनों में कमी आएगी। बीमारियों से बचाने वाले जैव रसायनों में भी कमी आने की संभावना है। यदि पृथ्वी का तापमान और अधिक बढ़ गया तो धरती का एक-चौथाई हिस्सा रेगिस्तान में तब्दील हो जाएगा। वहीं 20-30 प्रतिशत हिस्सा सूखे का शिकार होगा। नतीजतन, दुनियाभर में लगभग 150 करोड़ से अधिक लोग प्रभावित होंगे। जंगलों में आग की घटनाओं में बेतहाशा वृद्धि होगी। इसका सबसे ज्यादा असर भारत समेत दक्षिण-पूर्व एशिया, दक्षिण यूरोप, मध्य अमेरिका और दक्षिण ऑस्ट्रेलिया पर पड़ेगा।

चौंकाने वाली बात यह कि ग्लोबल वार्मिंग के चलते पहले बीते चार दशकों में कम हो चुकी उर्वरा शक्ति वाली जमीन की सेहत बिगड़ने की दर अब सौ गुणा बढ़ गई है। उस हालत में भविष्य में दुनिया की आबादी का पेट भरने के लिए अन्य संसाधनों पर निर्भर होना पड़ेगा। आने वाले 24 वर्षों में भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका, म्यांमार, मध्यपूर्व और उत्तरी अफ्रीका को इस चुनौती का भीषण सामना करना पड़ेगा। इन क्षेत्रों में सदी के अंत तक तापमान 50 डिग्री सेल्सियस के पार पहुंच जाएगा। इसका असर खाद्यान्न, पेयजल और प्राकृतिक संसाधनों पर पड़ेगा। नतीजन आम आदमी का जीवन मुहाल हो जाएगा।

प्रकृति के सारे उतार-चढ़ाव मानवता को संभलने के लिए चेतावनी हैं। पर्यावरण तेजी से बदल रहा है। लेकिन हम लोग इन्हें समझने और गंभीरता से लेने के बजाय नजरअंदाज कर रहे हैं। जरूरत इस दिशा में ईमानदारी से प्रयास करने की है मसलन, जीवनशैली में बदलाव व प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाना। ताकि पूरी पृथ्वी और मानवता के साथ-साथ इस ग्रह पर रहने वाले तमाम जीव-जंतुओं को विनाश से बचाया जा सके।

प्रेरणा

दुराग्रह का अंधा संघर्ष: जब अहंकार विवेक को निगल जाता है

एक छोटी-सी नदी थी। उस नदी को पार करने के लिए लोगों ने एक विशाल पेड़ का लट्ठा रख दिया था। वह इतना चौड़ा नहीं था कि दो व्यक्ति या दो जानवर एक साथ उस पर चल सकें। एक समय में केवल एक ही प्राणी उस पर से सुरक्षित निकल सकता था। एक दिन संयोगवश दो बकरे नदी के दोनों किनारों से एक ही समय पर उस लट्ठे पर चढ़ गए। दोनों अपने-अपने रास्ते आगे बढ़ते रहे और कुछ ही क्षणों में बीच में आकर आमने-सामने खड़े हो गए।

अब समस्या यह थी कि आगे बढ़ने का रास्ता दोनों के लिए बंद था। यदि उनमें से कोई एक थोड़ा पीछे हट जाता, तो दूसरा निकल जाता और फिर पहला भी आसानी से पार हो सकता था। परंतु ऐसा करने के लिए विनम्रता, धैर्य और विवेक की आवश्यकता थी। दुर्भाग्य से दोनों के भीतर इन गुणों के स्थान पर अहंकार और जिद भरी हुई थी।

दोनों एक-दूसरे को घूरने लगे। कोई भी पीछे हटने को तैयार नहीं था। उन्हें लग रहा था कि यदि वे पीछे हट गए तो उनकी हार हो जाएगी और दूसरे की जीत। अपने छोटे-से अहंकार को बचाने के लिए वे वास्तविक परिस्थिति को समझने में असफल रहे। उन्होंने यह नहीं सोचा कि थोड़ी-सी नम्रता उन्हें जीवनदान दे सकती है। वे केवल अपनी जिद और स्वाभिमान की झूठी भावना में डूबे रहे।

कुछ देर तक दोनों अड़े रहे। फिर एक ने दूसरे को धक्का दिया। दूसरे ने भी जवाब में जोरदार टक्कर मारी। धीरे-धीरे धक्कामुक्की बढ़ती गई। अब उनका उद्देश्य नदी पार करना नहीं रहा, बल्कि एक-दूसरे को हराना और नीचा दिखाना बन गया। वे भूल गए कि जिस स्थान पर वे खड़े हैं, वह अत्यंत संकीर्ण और खतरनाक है। थोड़ी-सी असावधानी उन्हें नदी में गिरा सकती है।

उन्माद और क्रोध में अंधे होकर दोनों बार-बार एक-दूसरे पर प्रहार करने लगे। अंततः एक जोरदार टक्कर हुई और संतुलन बिगड़ गया। दोनों बकरे लट्ठे से नीचे नदी में जा गिरे। नदी का प्रवाह तेज था। दोनों बहते चले गए और कुछ ही देर में मृत्यु के मुंह में समा गए।

यह कथा केवल दो बकरों की नहीं है। यह मनुष्य के जीवन का भी सटीक चित्रण है। संसार में अधिकांश संघर्ष इसी प्रकार जन्म लेते हैं। लोग छोटी-सी बात को प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लेते हैं। वे भूल जाते हैं कि जीवन में हर परिस्थिति युद्ध लड़ने के लिए नहीं होती। कई बार पीछे हट जाना, समझौता कर लेना या दूसरे को अवसर दे देना ही सबसे बड़ी बुद्धिमानी होती है।

परंतु जब अहंकार मन पर हावी हो जाता है, तब व्यक्ति सही और गलत का विवेक खो बैठता है। उसे केवल अपनी जीत दिखाई देती है। वह यह नहीं देख पाता कि जिस लड़ाई को वह जीतना चाहता है, उसमें उसकी अपनी हानि कितनी बड़ी हो सकती है। परिणाम यह होता है कि वह दूसरों को नुकसान पहुंचाने की कोशिश में स्वयं भी विनाश के मार्ग पर चल पड़ता है।

परिवारों में होने वाले अनेक विवाद इसी दुराग्रह के कारण बढ़ते हैं। पति-पत्नी, भाई-भाई, पिता-पुत्र या मित्रों के बीच छोटी-सी गलतफहमी भी तब गंभीर रूप धारण कर लेती है जब कोई भी अपनी बात से पीछे हटने को तैयार नहीं होता। यदि दोनों पक्ष थोड़ा धैर्य और विनम्रता दिखाएं तो समस्या का समाधान सरलता से हो सकता है, किंतु अहंकार उन्हें ऐसा करने नहीं देता।

समाज और राजनीति में भी यही स्थिति देखने को मिलती है। कई बार दो पक्ष अपने-अपने विचारों को सर्वोपरि मानकर टकराव की राह चुन लेते हैं। वे संवाद और सहयोग की संभावना को छोड़ देते हैं। परिणामस्वरूप संघर्ष बढ़ता है और नुकसान दोनों का होता है। इतिहास गवाह है कि अनेक युद्ध केवल इसलिए हुए क्योंकि शासकों ने समय रहते अपने अहंकार को नियंत्रित नहीं किया।

वास्तव में पीछे हटना हमेशा कमजोरी का प्रतीक नहीं होता। कई बार यह उच्च बुद्धिमत्ता और दूरदर्शिता का प्रमाण होता है। जो व्यक्ति परिस्थिति को समझकर अपने क्रोध और जिद पर नियंत्रण कर लेता है, वही सच्चा विजेता कहलाता है। जो केवल लड़ना जानता है, वह कभी-कभी जीतकर भी हार जाता है; लेकिन जो समझदारी से निर्णय लेता है, वह बिना लड़े भी बड़ी विजय प्राप्त कर लेता है।

भारतीय संस्कृति में विनम्रता को महान गुण माना गया है। संतों और महापुरुषों ने सदैव यह शिक्षा दी है कि मनुष्य को अपने अहंकार पर नियंत्रण रखना चाहिए। अहंकार व्यक्ति को सत्य से दूर ले जाता है, जबकि विनम्रता उसे वास्तविकता का बोध कराती है। जो झुकना जानता है, वही परिस्थितियों के साथ सामंजस्य स्थापित कर पाता है।

दुराग्रह का सबसे बड़ा दोष यह है कि वह व्यक्ति की सोच को संकीर्ण बना देता है। वह केवल अपनी बात को सही मानता है और दूसरों के दृष्टिकोण को समझने का प्रयास नहीं करता। ऐसी स्थिति में समाधान की सभी संभावनाएं समाप्त हो जाती हैं। फिर संघर्ष ही एकमात्र मार्ग दिखाई देता है और उसका परिणाम प्रायः विनाशकारी होता है।

दो बकरों की यह छोटी-सी घटना हमें एक गहरा जीवन-संदेश देती है। जीवन में ऐसे अनेक अवसर आते हैं जब हमें निर्णय लेना होता है कि हम अपने अहंकार को बचाएं या अपने जीवन और संबंधों को। जो लोग अहंकार को चुनते हैं, वे अक्सर पछतावे और हानि का सामना करते हैं। जो लोग विवेक, धैर्य और विनम्रता को अपनाते हैं, वे शांति, सफलता और सम्मान प्राप्त करते हैं।

इसलिए जब भी किसी विवाद, टकराव या मतभेद की स्थिति उत्पन्न हो, तब हमें उन दोनों बकरों की कहानी याद रखनी चाहिए। यदि समय रहते हम अपने दुराग्रह को छोड़ दें, तो अनेक संकटों से बच सकते हैं। जिद और उन्माद का अंत प्रायः विनाश में होता है, जबकि समझदारी और विनम्रता का मार्ग जीवन को सुरक्षित, सुखद और सार्थक बनाता है। यही इस कथा का सार है कि क्षणिक अहंकार के लिए जीवनभर की शांति को दांव पर नहीं लगाना चाहिए, क्योंकि दुराग्रह का अंधा संघर्ष अंततः सभी को नुकसान पहुंचाता है।

Modi 10 June को रचने जा रहे हैं सबसे बड़ा इतिहास, भारतीय लोकतंत्र के नये रिकॉर्ड को देखकर दुनिया कह उठेगी वाह

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारतीय राजनीति में एक नया इतिहास रच दिया है। दस जून को वह देश के सबसे लंबे समय तक लगातार निर्वाचित प्रधानमंत्री रहने वाले नेता बन जाएंगे। इस उपलब्धि के साथ वह पंडित जवाहरलाल नेहरू के उस लंबे कार्यकाल को पीछे छोड़ देंगे, जिसे दशकों तक भारतीय राजनीति का सबसे मजबूत अध्याय माना जाता रहा। मई 2014 में पहली बार प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने वाले नरेंद्र मोदी दस जून 2026 तक लगातार चार हजार 399 दिनों तक देश का नेतृत्व कर चुके होंगे, जबकि नेहरू का लगातार निर्वाचित कार्यकाल चार हजार 398 दिनों का था। यह केवल समय का रिकॉर्ड नहीं है, बल्कि भारतीय राजनीति के बदलते स्वरूप का प्रतीक भी है। एक ओर नेहरू का दौर था, जब कांग्रेस स्वतंत्रता आंदोलन की विरासत के सहारे लगभग निर्विरोध सत्ता में थी, वहीं दूसरी ओर नरेंद्र मोदी का उदय बेहद कठिन और प्रतिस्पर्धी राजनीतिक माहौल में हुआ। मोदी ने पहले गुजरात में लगातार तीन विधानसभा चुनाव जीतकर अपनी राजनीतिक और प्रशासनिक क्षमता साबित की और फिर पूरे देश में भारतीय जनता पार्टी को अभूतपूर्व ऊंचाइयों तक पहुंचाया।

साल 2014 भारतीय राजनीति का निर्णायक मोड़ साबित हुआ। नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी ने तीन दशकों बाद किसी गैर कांग्रेसी दल को पूर्ण बहुमत दिलाया। कांग्रेस मात्र 44 सीटों पर सिमट गई और देश में गठबंधन युग की राजनीति को निर्णायक चुनौती मिली। इसके बाद 2019 में भाजपा ने और भी बड़ी जीत दर्ज करते हुए तीन सौ तीन सीटें हासिल कीं। वर्ष 2024 में भले ही पार्टी अपने दम पर बहुमत से थोड़ी दूर रही, लेकिन राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन ने फिर सत्ता बरकरार रखी।

देखा जाये तो प्रधानमंत्री मोदी का राजनीतिक सफर उनकी संगठन क्षमता और जनसंपर्क कौशल का भी उदाहरण है। गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में उन्होंने भूकंप के बाद बदहाल स्थिति में राज्य की कमान संभाली और विकास आधारित प्रशासन को नई पहचान दी। यही मॉडल बाद में पूरे देश में चर्चा का विषय बना। गुजरात में लगातार तीन चुनाव जीतकर वह राज्य के सबसे लंबे समय तक सेवा देने वाले मुख्यमंत्री बने।

मोदी सरकार के कार्यकाल में कई ऐसे फैसले हुए जिन्हें दशकों तक असंभव माना जाता था। जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाना, तीन तलाक समाप्त करना और अयोध्या में राम मंदिर निर्माण का मार्ग प्रशस्त होना, ऐसे ऐतिहासिक कदम रहे जिन्होंने भारतीय राजनीति की दिशा बदल दी। भाजपा समर्थकों का मानना है कि सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और विकास के संतुलन ने मोदी को देश की जनता के बीच असाधारण स्वीकार्यता दिलाई।

प्रधानमंत्री मोदी की लोकप्रियता केवल भारत तक सीमित नहीं है। विश्व स्तर पर भी उनकी पहचान एक मजबूत और निर्णायक नेता के रूप में बनी है। विभिन्न वैश्विक सर्वेक्षणों में उनकी लोकप्रियता दुनिया के कई लोकतांत्रिक नेताओं से कहीं अधिक दर्ज की जाती रही है। डिजिटल माध्यमों पर भी उनकी पहुंच अत्यंत प्रभावशाली है। सोशल मीडिया के जरिए उन्होंने जनता से सीधा संवाद स्थापित कर एक नई राजनीतिक शैली की शुरुआत सबसे पहले की थी, जिसका उन्हें भरपूर लाभ मिला।

मोदी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी का भौगोलिक विस्तार भी अभूतपूर्व रहा है। वर्ष 2014 में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन केवल सात राज्यों में सत्ता में था, जबकि अब यह संख्या 21 हो चुकी है। पूर्वोत्तर से लेकर पूर्वी तथा दक्षिण भारत तक भाजपा ने अपने संगठन और जनाधार को मजबूत किया है। संसद में भी पार्टी की ताकत लगातार बढ़ी है। लोकसभा और राज्यसभा दोनों सदनों में भाजपा की उपस्थिति पहले की तुलना में कई गुना मजबूत हुई है।

आर्थिक मोर्चे पर भी मोदी सरकार ने कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की हैं। भारत की अर्थव्यवस्था ने पिछले एक दशक में तेज गति से विस्तार किया है। वर्ष 2014 में दुनिया की दसवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था रहा भारत अब चौथे स्थान पर पहुंच चुका है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के अनुसार भारत की अर्थव्यवस्था का आकार 4.3 खरब डॉलर तक पहुंच गया है। जापान को पीछे छोड़ते हुए भारत अब केवल अमेरिका, चीन और जर्मनी से पीछे है।

इसमें कोई दो राय नहीं कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का यह लंबा कार्यकाल केवल राजनीतिक स्थायित्व का उदाहरण नहीं, बल्कि बदलते भारत की नई पहचान भी बन गया है। उन्होंने भारतीय राजनीति की भाषा, शैली और प्राथमिकताओं को बदलते हुए विकास, राष्ट्रवाद और मजबूत नेतृत्व का ऐसा मिश्रण प्रस्तुत किया, जिसने उन्हें समकालीन भारत का सबसे प्रभावशाली नेता बना दिया है।

बहरहाल, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत केवल आर्थिक और राजनीतिक रूप से ही मजबूत नहीं हुआ, बल्कि विकसित भारत और आत्मनिर्भर भारत जैसे अभियानों के माध्यम से आत्मविश्वास से भरे नए राष्ट्र के रूप में उभरा है। घरेलू उत्पादन, रक्षा निर्माण, डिजिटल क्रांति, स्टार्टअप संस्कृति और आधारभूत ढांचे के विस्तार ने भारत को आत्मनिर्भरता की दिशा में तेजी से आगे बढ़ाया है। वहीं वैश्विक मंच पर मोदी की कूटनीति ने भारत की प्रतिष्ठा को अभूतपूर्व ऊंचाइयों तक पहुंचाया है। अमेरिका से लेकर पश्चिम एशिया, यूरोप से लेकर इंडो पैसिफिक तक भारत की आवाज पहले से कहीं अधिक प्रभावशाली हुई है। जी-20 की सफल अध्यक्षता, वैश्विक संकटों में संतुलित भूमिका और भारत केंद्रित विदेश नीति ने यह साबित किया है कि नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत अब केवल दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र नहीं, बल्कि वैश्विक निर्णयों को प्रभावित करने वाली एक निर्णायक शक्ति बन चुका है।

अभियान

नीलांचल की पहाड़ियों पर आस्था का महासंगम: अंबुबाची मेले की अद्भुत परंपरा

भारत को त्योहारों, तीर्थों और आध्यात्मिक परंपराओं का देश कहा जाता है। यहां हर क्षेत्र की अपनी अलग धार्मिक पहचान और सांस्कृतिक विरासत है। कुछ परंपराएं ऐसी हैं जो केवल पूजा-पाठ तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि जीवन, प्रकृति और मानव अस्तित्व के गहरे रहस्यों को भी अपने भीतर समेटे होती हैं। असम के गुवाहाटी स्थित कामाख्या मंदिर में आयोजित होने वाला अंबुबाची मेला ऐसी ही एक अद्वितीय परंपरा है। यह केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि शक्ति, सृजन, प्रकृति और नारीत्व के सम्मान का विराट उत्सव है।

हर वर्ष जून माह में आयोजित होने वाला यह मेला लाखों श्रद्धालुओं को अपनी ओर आकर्षित करता है। देश के विभिन्न राज्यों के अलावा विदेशों से भी लोग इस अनोखे आयोजन को देखने आते हैं। इस दौरान पूरा नीलांचल पर्वत आस्था, भक्ति और साधना का केंद्र बन जाता है। साधु-संतों के अखाड़े, तांत्रिक साधकों की उपस्थिति, भजन-कीर्तन की ध्वनि और श्रद्धालुओं की भीड़ इस पर्व को एक अलौकिक स्वरूप प्रदान करती है।

कामाख्या मंदिर हिंदू धर्म के प्रमुख शक्तिपीठों में से एक माना जाता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार जब माता सती ने अपने पिता दक्ष के यज्ञ में अपमानित होकर योगाग्नि द्वारा देह त्याग दी, तब भगवान शिव उनके शरीर को लेकर ब्रह्मांड में विचरण करने लगे। सृष्टि के संतुलन को बनाए रखने के लिए भगवान विष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र से माता सती के शरीर के कई भाग कर दिए। जहां-जहां उनके अंग गिरे, वहां शक्तिपीठों की स्थापना हुई। मान्यता है कि कामाख्या धाम वह पवित्र स्थल है जहां माता सती का योनिभाग गिरा था। इसी कारण यह स्थान स्त्री शक्ति और सृजन का सर्वोच्च प्रतीक माना जाता है।

कामाख्या मंदिर की विशेषता यह है कि यहां देवी की कोई प्रतिमा स्थापित नहीं है। मंदिर के गर्भगृह में एक प्राकृतिक शिलाखंड है, जिसे देवी का स्वरूप माना जाता है। इस शिला से निरंतर जल का प्रवाह होता रहता है। भक्त इसे देवी की जीवंत शक्ति का प्रमाण मानते हैं। यही कारण है कि कामाख्या धाम का महत्व केवल धार्मिक दृष्टि से ही नहीं बल्कि तांत्रिक और आध्यात्मिक परंपराओं में भी अत्यधिक है।

अंबुबाची मेले का आधार एक विशेष धार्मिक मान्यता है। श्रद्धालुओं का विश्वास है कि वर्ष में एक बार माता कामाख्या रजस्वला होती हैं। इस अवधि में मंदिर के कपाट तीन दिनों के लिए बंद कर दिए जाते हैं। इस दौरान देवी को विश्राम दिया जाता है और किसी प्रकार की नियमित पूजा-अर्चना नहीं की जाती। वर्ष 2026 में यह पर्व 22 जून से आरंभ होकर 25 जून तक चलेगा। इसके बाद विशेष अनुष्ठानों और शुद्धिकरण प्रक्रिया के उपरांत मंदिर के कपाट पुनः श्रद्धालुओं के लिए खोल दिए जाएंगे।

इन तीन दिनों के दौरान मंदिर में पूजा भले ही बंद रहती हो, लेकिन श्रद्धालुओं की आस्था और भक्ति में कोई कमी नहीं आती। हजारों लोग मंदिर परिसर के बाहर बैठकर जप, ध्यान और साधना करते हैं। अनेक श्रद्धालु इस अवधि को आत्मचिंतन और आध्यात्मिक उन्नति का समय मानते हैं। उनका विश्वास है कि इस समय देवी की शक्ति विशेष रूप से जागृत रहती है।

अंबुबाची मेले का एक महत्वपूर्ण पहलू तांत्रिक परंपरा से इसका गहरा संबंध है। कामाख्या धाम को तंत्र साधना का सबसे बड़ा केंद्र माना जाता है। देशभर से तांत्रिक साधक और अघोरी इस अवधि में यहां पहुंचते हैं। उनके लिए यह समय विशेष साधना और आध्यात्मिक उपलब्धियों का अवसर माना जाता है। कई साधक मानते हैं कि इस अवधि में की गई साधना शीघ्र फल प्रदान करती है। यही कारण है कि अंबुबाची मेला विश्व के प्रमुख तांत्रिक आयोजनों में भी गिना जाता है।

इस मेले से जुड़ी एक और रोचक मान्यता ब्रह्मपुत्र नदी के जल के रंग परिवर्तन को लेकर है। श्रद्धालुओं का विश्वास है कि देवी के रजस्वला होने के दौरान नदी का जल हल्का लाल रंग धारण कर लेता है। इसे देवी की शक्ति का दिव्य संकेत माना जाता है। हालांकि वैज्ञानिकों का कहना है कि मानसून के दौरान मिट्टी, खनिज और प्राकृतिक तत्वों के कारण जल के रंग में परिवर्तन हो सकता है। लेकिन आस्था की दृष्टि से यह घटना करोड़ों श्रद्धालुओं के लिए देवी की उपस्थिति का प्रतीक बनी हुई है। अंबुबाची पर्व का सबसे प्रेरणादायक पक्ष यह है कि यह स्त्री के प्राकृतिक स्वरूप का सम्मान करता है। भारतीय समाज में मासिक धर्म को लेकर लंबे समय तक कई प्रकार की सामाजिक धारणाएं और संकोच रहे हैं। लेकिन कामाख्या धाम की परंपरा स्त्री के रजस्वला होने को अपवित्रता नहीं, बल्कि शक्ति और सृजन का प्रतीक मानती है। यह संदेश आज के समाज के लिए भी अत्यंत प्रासंगिक है, क्योंकि यह नारी सम्मान और समानता की भावना को मजबूत करता है। मेला समाप्त होने के बाद श्रद्धालुओं को विशेष प्रसाद वितरित किया जाता है। इसे अंगोदक और अंगवस्त्र कहा जाता है। अंगोदक पवित्र जल होता है जबकि अंगवस्त्र लाल रंग का कपड़ा होता है। श्रद्धालु इसे देवी के आशीर्वाद के रूप में ग्रहण करते हैं और अपने घरों में सुरक्षित रखते हैं। मान्यता है कि यह प्रसाद सुख, समृद्धि और आध्यात्मिक सुरक्षा प्रदान करता है।

अंबुबाची मेला केवल धार्मिक आयोजन नहीं बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक उत्सव भी है। इस दौरान असम की लोक संस्कृति, पारंपरिक संगीत, नृत्य, हस्तशिल्प और स्थानीय व्यंजन भी आकर्षण का केंद्र बनते हैं। विभिन्न राज्यों से आने वाले लोग यहां भारतीय संस्कृति की विविधता और एकता का अद्भुत अनुभव करते हैं। पर्यटन के क्षेत्र में भी इस मेले का विशेष महत्व है। लाखों श्रद्धालुओं और पर्यटकों के आगमन से स्थानीय अर्थव्यवस्था को बड़ा लाभ मिलता है। होटल, परिवहन सेवाएं, स्थानीय बाजार, हस्तशिल्प उद्योग और छोटे व्यापारियों की आय में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। इस प्रकार यह आयोजन धार्मिक महत्व के साथ-साथ आर्थिक विकास का भी महत्वपूर्ण माध्यम बनता है। इतनी विशाल संख्या में श्रद्धालुओं के आगमन को देखते हुए प्रशासन को व्यापक स्तर पर तैयारियां करनी पड़ती हैं। सुरक्षा व्यवस्था, स्वास्थ्य सेवाएं, यातायात नियंत्रण, स्वच्छता और आवास की सुविधाओं पर विशेष ध्यान दिया जाता है। राज्य सरकार और स्थानीय प्रशासन कई महीने पहले से योजना बनाकर इस आयोजन को सफल बनाने में जुट जाते हैं।

अंबुबाची महापर्व का एक गहरा दार्शनिक पक्ष भी है। यह हमें प्रकृति के चक्रों का सम्मान करना सिखाता है। जिस प्रकार धरती वर्षा के बाद नई ऊर्जा प्राप्त करती है और जीवन का नया चक्र शुरू होता है, उसी प्रकार स्त्री भी सृजन और पोषण की शक्ति का स्रोत है। इस पर्व में प्रकृति और नारी शक्ति के इसी संबंध को सम्मान दिया जाता है। कई विद्वान मानते हैं कि यह पर्व कृषि संस्कृति से भी जुड़ा हुआ है। जून का महीना मानसून की शुरुआत का समय होता है। वर्षा के आगमन के साथ धरती नई फसल के लिए तैयार होती है। इसलिए देवी के रजस्वला होने की अवधारणा को धरती की उर्वरता और नवसृजन का प्रतीक भी माना जाता है। इस प्रकार यह पर्व धर्म, प्रकृति और कृषि जीवन के बीच एक सुंदर संबंध स्थापित करता है। आधुनिक समय में जब लोग अपनी सांस्कृतिक जड़ों से दूर होते जा रहे हैं, तब अंबुबाची मेला उन्हें अपनी परंपराओं और आध्यात्मिक मूल्यों से जोड़ने का कार्य करता है।

यह पर्व हमें याद दिलाता है कि भारतीय संस्कृति केवल अनुष्ठानों का संग्रह नहीं है, बल्कि जीवन के प्रत्येक पहलू को समझने का एक गहन दृष्टिकोण भी है। अंबुबाची मेला हमें यह भी सिखाता है कि नारी केवल समाज का एक हिस्सा नहीं, बल्कि सृष्टि की आधारशिला है। उसकी शक्ति, संवेदनशीलता और सृजन क्षमता ही जीवन को आगे बढ़ाती है। इसलिए नारी का सम्मान करना केवल सामाजिक जिम्मेदारी नहीं, बल्कि आध्यात्मिक कर्तव्य भी है। अंततः अंबुबाची महापर्व आस्था, शक्ति, प्रकृति और संस्कृति का ऐसा अद्भुत संगम है, जो भारतीय सभ्यता की महानता को प्रदर्शित करता है। यह पर्व केवल देवी की पूजा का अवसर नहीं, बल्कि जीवन के मूल स्रोतों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का भी माध्यम है। नीलांचल की पावन पहाड़ियों पर आयोजित यह महोत्सव आज भी करोड़ों लोगों को आध्यात्मिक ऊर्जा, सांस्कृतिक गर्व और मानवीय मूल्यों की प्रेरणा प्रदान कर रहा है। यही कारण है कि अंबुबाची मेला भारत की सबसे अनूठी और रहस्यमयी धार्मिक परंपराओं में अपना विशेष स्थान बनाए हुए है।

PRGI NO. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HARDIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

धोलेरा की ऊसर भूमि में 'ड्रम प्लांटेशन' के अभिनव प्रयोग से खिल उठी हरियाली

- क्षारीय और बंजर भूमि तथा सूखे जैसे मुश्किल हालात में भी पौधे एक वर्ष में 12 फीट तक बढ़ गए
- मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में औद्योगिक विकास के साथ-साथ धोलेरा को विश्व स्तरीय टिकाऊ शहर के रूप में विकसित करने के साथ-साथ यहां हरित क्षेत्र बढ़ाने पर भी विशेष ध्यान केंद्रित किया गया है
- डीएसआईआरडीए ने इस प्रयोग के लिए गुजरात वन विभाग को दिया फंड
- इस अभिनव प्रयोग को मिली सफलता के बाद क्षेत्र में हरियाली बढ़ाने के ठोस प्रयास किए जा रहे हैं
- इस वर्ष अतिरिक्त 20 हेक्टेयर क्षेत्र में इसी प्रकार से पौधरोपण शुरू किया गया है

गांधीनगर : गर्मी की चिलचिलाती धूप में अहमदाबाद जिले के समुद्र तट के निकट स्थित धोलेरा में यात्रा करना एक बहुत ही कठिन अनुभव होता है। आग बरसाती सूर्य की किरणों के साथ ही ऊसर और बंजर समतल भूमि के कारण अर्ध-शुष्क जलवायु वाले इस क्षेत्र में खुले में जीवन सचमुच एक चुनौती बन जाता है। इसके बावजूद, वन विभाग ने इन कठिन परिस्थितियों के बीच ब्लॉक नं. 29 में एक अभिनव प्रयोग करके एक हरियाला वन विकसित किया है, जो इस रण यानी रेगिस्तानी क्षेत्र में मृगमरीचिका जैसा नजर आता है।

धोलेरा की क्षारीय और खारी भूमि पर गुजरात वन विभाग के अहमदाबाद (सामाजिक वनीकरण) विभाग द्वारा विकसित की गई नवीन 'ड्रम प्लांटेशन' पद्धति से 3200 से अधिक पौधे रोपे गए हैं। कठिन जलवायु की चुनौतियों की बीच भी इस प्रयोग से पौधे उगाने में सफलता मिली है।

तेजी से विकसित हो रहे औद्योगिक शहर धोलेरा में हरित क्षेत्र बढ़ाने के उद्देश्य से इस प्रोजेक्ट को धोलेरा विशेष निवेश क्षेत्र विकास प्राधिकरण (डीएसआईआरडीए) द्वारा फंड किया गया है।

देश के सेमीकंडक्टर मैन्युफैक्चरिंग हब के रूप में उभर रहे धोलेरा में यह हरित क्षेत्र टिकाऊ विकास का प्रतीक बन गया है। अत्यंत लवणीय यानी खारी भूमि और कठिन जलवायु में, जहां प्राकृतिक रूप से घास भी नहीं उग पाती, वहां इस पहल को मिली सफलता का विशेष महत्व है।

प्रायोगिक स्तर पर 3200 पौधों को उगाने में मिली सफलता

वन विभाग के अधिकारियों के अनुसार अगस्त-2025 में 15 किस्म के 3200 से अधिक पौधों को प्लास्टिक के ड्रमों का उपयोग करके रोपा गया था। इस प्रयोग का उद्देश्य पौधों की जड़ों को ऊंचाई पर रखकर भूमि के खारेपन से सुरक्षित रखना था। उल्लेखनीय बात यह है कि एक वर्ष से भी कम समय में बहुत से पौधे 12 फीट तक ऊंचे हो गए हैं, जो इस क्षेत्र के लिए एक शानदार उपलब्धि है।

अहमदाबाद सामाजिक वनीकरण विभाग की उप वन संरक्षक (डीसीएफ) डॉ. मीनल जानी ने कहा, "इस बंजर और लवणीय भूमि में पौधे लगाना अनेक प्रकार से चुनौतीपूर्ण कार्य था। मिट्टी में विद्युत चालकता (इलेक्ट्रो-कंडक्टिविटी) बहुत ऊंची थी, कार्बन की मात्रा काफी कम थी और खारापन भी बहुत अधिक था। इसके अलावा, इस क्षेत्र में छह महीने तक पानी भरा रहता है, जिससे पौधों का विकास लगभग असंभव हो जाता था। इन चुनौतियों से निपटने के लिए हमने ड्रम प्लांटेशन तकनीक अपनाई, जिसमें पौधों को ड्रम के भीतर ऊंचाई पर रोपा गया। इन ड्रमों में रेती, पोषक तत्वों से भरपूर मिट्टी, वर्मी कम्पोस्ट, फसलों के अवशेष और कोकोपीट भरे गए।"

डॉ. मीनल जानी ने आगे कहा, "ड्रम के दोनों ओर हवा के आने-जाने के लिए छिद्र बनाए गए और उन्हें जमीन में लगभग एक फुट की गहराई पर दबा दिया गया। डीएसआईआरडीए ने आवश्यक मीठा पानी सुलभ कराया। सभी पौधों के लिए टपक सिंचाई (ड्रिप इरिगेशन) की व्यवस्था की गई। इन सभी प्रयासों के कारण, आज लगभग सभी पौधे जीवंत हैं और कइयों में तो फल भी आने लगे हैं। जिसके चलते यहां परागण करने वाले जीव-जंतु और पक्षी चहचहा रहे हैं।"

15 से अधिक प्रजातियों के पौधे रोपे गए

इस क्षेत्र को हरा-भरा बनाने के लिए यहां 15 से अधिक प्रजातियों के पौधे लगाए गए हैं, जिनमें पीलू (मेसवाक), पलाश, सेमल, पारस पीपल, बरगद, पीपल, पीला गुलमोहर, देसी बबूल, करंज, अर्जुन, जंगल जलेबी, नीम, लिसोड़ा या गूंदा और इमली शामिल हैं।

एक नया इकोसिस्टम बना, पोलिनेटर्स और पक्षियों की चहचहाहट से गूंज उठा क्षेत्र

डॉ. मीनल जानी ने कहा, "जहां कभी घास का तिनका भी नहीं उग पाता था, अब वहां भूमि की स्थिति में सुधार के कारण परागण करने वाले जीव-जंतु (पोलिनेटर्स), पक्षी और प्राकृतिक रूप से उगने वाली घास दिखाई दे रही है।"

अधिकारियों ने यह भी स्पष्ट किया कि बुवाई की प्रक्रिया में उपयोग में लिए गए प्लास्टिक के ड्रमों को बाद में हटाकर रिसाइकिल किया जाएगा, ताकि यह प्रोजेक्ट पर्यावरण की दृष्टि से पूरी तरह टिकाऊ बना रहे।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का विजन धोलेरा विशेष निवेश क्षेत्र (एसआईआर) को टिकाऊ औद्योगिकीकरण के लिए वैश्विक मानक के तौर पर विकसित करना है। इसका उद्देश्य धोलेरा को भारत की पहली ग्रीनफील्ड स्मार्ट सिटी और अत्याधुनिक मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर का एक अग्रणी केंद्र बनाना है।

प्रोजेक्ट की सफलता के बाद अतिरिक्त 20 हेक्टेयर क्षेत्र में पौधरोपण किया जाएगा

पायलट प्रोजेक्ट की सफलता से उत्साहित होकर धोलेरा विशेष निवेश क्षेत्र विकास प्राधिकरण (डीएसआईआरडीए) ने बुवाई अभियान के विस्तार के लिए 20 हेक्टेयर अतिरिक्त भूमि आवंटित करने के साथ ही फंड भी दिया है। अगले चरण में धोलेरा एक्टिवेशन क्षेत्र में इसी ड्रम प्लांटेशन पद्धति से लगभग 50,000 और पौधे रोपने की योजना है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में पर्यावरण संरक्षण के प्रति भारत की प्रतिबद्धता देशभर में हरित क्षेत्र बढ़ाने के निरंतर प्रयासों में प्रतिबिंबित होती है। जनभागीदारी, वृक्षारोपण अभियान और टिकाऊ विकास की पहलों के माध्यम से भारत आने वाली पीढ़ियों के लिए और भी हरित एवं स्वस्थ भविष्य का निर्माण कर रहा है। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में राज्य में औद्योगिक विकास तेजी से आगे बढ़ रहा है, तब धोलेरा को विश्व स्तरीय टिकाऊ शहर के रूप में विकसित करने के साथ-साथ यहां हरित क्षेत्र बढ़ाने पर भी विशेष ध्यान केंद्रित किया गया है।

विश्व पर्यावरण दिवस : 5 जून

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के करकमलों से गुजरात में 'एक पेड़ मां के नाम 3.0' महाअभियान का गांधीनगर से शुभारंभ किया जाएगा

- 'एक पेड़ मां के नाम 3.0' अंतर्गत राज्यभर में पहले ही दिन 6 लाख पौधों का रोपण किया जाएगा
- प्रकृति के संरक्षण के लिए मुख्यमंत्री की पहल : गांधीनगर लोकसभा क्षेत्र को 'हरियाली लोकसभा' बनाने के लिए वन विभाग द्वारा लगभग 500 हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र में 50 लाख से अधिक पौधे लगाकर 'वन कवच - माइक्रो फॉरेस्ट' तैयार किया जाएगा

गांधीनगर : कल यानी कि 05 जून 'विश्व पर्यावरण दिवस' पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी से प्रेरित 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के तीसरे चरण का शुभारंभ होगा। गांधीनगर से मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के करकमलों से राज्यव्यापी अभियान का आरंभ किया जाएगा। गांधीनगर के 'ज' रोड पर लोकभवन स्टाफ क्वार्टर्स के पास 0.5 हेक्टेयर क्षेत्र में 'वन कवच' पद्धति से लगभग 5,000 पौधों का रोपण कर यह राज्यव्यापी अभियान शुरू किया जाएगा।

उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री द्वारा वर्ष 2024 में नई दिल्ली के बुद्ध जयंती पार्क से 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान का शुभारंभ किया गया था।

वन विभाग के अनुसार वन एवं पर्यावरण मंत्री श्री अर्जुन मोढवाडिया तथा राज्य मंत्री श्री प्रवीण माळी के मार्गदर्शन में समग्र राज्य में इस अभियान को गतिमान बनाया जाएगा।

पर्यावरणीय संतुलन और जैव विविधता (बायोडायवर्सिटी) के संरक्षण के लिए गांधीनगर में 57 स्थानीय प्रजातियों के पौधों का रोपण किया जाएगा। जो कि त्रि-स्तरीय होगा। जिसमें 16 प्रजातियों के 20 प्रतिशत उच्च स्तरीय पौधें, 25 प्रजातियों के 50 प्रतिशत मध्यम स्तरीय तथा विभिन्न 16 प्रजातियों के 30 प्रतिशत निम्न स्तरीय पौधों का समावेश होगा। इस वन कवच (माइक्रो फॉरेस्ट) की विशेषता यह है कि यह बहुत कम स्थान में अत्यंत सघन तथा तेजी से विकसित होने वाला शहरी जंगल तैयार करता है।

इसके अतिरिक्त; वन विभाग के अनुसार इस अभियान अंतर्गत केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री तथा गांधीनगर लोकसभा क्षेत्र के सांसद श्री अमित शाह के लोकसभा क्षेत्र को 'हरियाली लोकसभा' बनाने के लिए वन विभाग द्वारा लगभग 500 हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र में 50 लाख से अधिक पौधे लगाकर 'वन कवच - माइक्रो फॉरेस्ट' तैयार किया जाएगा।

विश्व पर्यावरण दिवस : वृक्षारोपण की माइक्रो प्लानिंग

'विश्व पर्यावरण दिवस' से शुरू कर आगामी सप्ताह तक वन विभाग द्वारा पूरे गुजरात को कवर करने वाले विभिन्न जन कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है, जो कि इस प्रकार हैं :

राज्यभर में ग्रामीण एवं शहरी स्तर पर कुल 50 हजार 'समूह स्तर' निर्धारित किए गए हैं। प्रत्येक समूह द्वारा 12 पौधों का रोपण किया जाएगा और एक ही दिन में पूरे राज्य में 6 लाख पौधों का रोपण किया जाएगा।

8 जून से 14 जून 2026: पर्यावरण सप्ताह

इस सप्ताह के दौरान प्रत्येक जिला स्तर पर मुख्य चार कार्यक्रम तथा सभी 265 तहसीलों को विधानसभा क्षेत्र में महानुभावों की अध्यक्षता में सघन पौधो का रोपण किया जाएगा। इसके अतिरिक्त सप्ताह के दौरान 265 तहसील स्तरीय कार्यक्रमों के माध्यम से 1.53 लाख से अधिक पौधों का रोपण किया जाएगा तथा 1.87 लाख से अधिक पौधे निःशुल्क वितरित किए जाएंगे। साथ ही तहसीलों में 861 निर्धारित स्थलों पर वन विभाग के मार्गदर्शन में अतिरिक्त 4.15 लाख से अधिक पौधे लगाए जाएंगे।

वन विभाग ने राज्य के प्रत्येक नागरिक, सामाजिक संस्थाओं तथा

भारतीय रेल पर पहली बार रनिंग रेल लाइन पर रोड क्रॉलर क्रेन द्वारा हैवी एवं लम्बे स्टील ओपन वेब गर्डरों का सफल प्रतिस्थापन वडोदरा मंडल की उपलब्धि

पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल द्वारा अहमदाबाद–वडोदरा रेलखंड पर महिसागर नदी के ऊपर स्थित ब्रिज संख्या 624 के सभी 8 स्पैनों के री-गर्डरिंग कार्य को सफलतापूर्वक पूर्ण किया गया। यह भारतीय रेल के लिए एक ऐतिहासिक उपलब्धि है, जहाँ रनिंग रेल लाइन पर 67.5 मीटर स्पैन तथा लगभग 320 टन वजनी स्टील ओपन वेब गर्डर का 600 टन एवं 800 टन क्षमता की रोड क्रॉलर क्रेनों की सहायता से प्रतिस्थापन भारतीय रेल में पहली बार किया गया है। इस ऐतिहासिक उपलब्धि पर वडोदरा मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके ने बताया कि महिसागर नदी पर स्थित इस 113 वर्ष पुराने महत्वपूर्ण रेलवे पुल के सभी 8 स्पैनों का सफल री-गर्डरिंग कार्य वडोदरा मंडल की इंजीनियरिंग दक्षता, नवाचार और टीम भावना का उत्कृष्ट उदाहरण है। उन्होंने बताया कि यह कार्य अत्यंत चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में, निर्धारित समयसीमा के भीतर तथा न्यूनतम ब्लॉकों में पूरा किया गया है। इसके लिए उन्होंने इस कार्य से जुड़े ब्रिज, टीआरडी, पी-वे, ऑपरेटिंग, इलेक्ट्रिकल एवं मैकेनिकल विभागों के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को इस उल्लेखनीय सफलता के लिए बधाई दी।

जलप्रवाह ने बनाया कार्य चुनौतीपूर्ण : वर्ष 1913 में ब्रिटिश शासनकाल के दौरान निर्मित यह पुल महिसागर नदी पर स्थित एक महत्वपूर्ण रेलवे संरचना है। नदी में वर्षभर जल प्रवाह रहने के कारण इस पुल पर री-गर्डरिंग का कार्य अत्यंत चुनौतीपूर्ण था। परियोजना के अंतर्गत 67.5 मीटर लंबे तथा लगभग 320 टन वजनी स्टील ओपन वेब गर्डरों का प्रतिस्थापन किया गया। इस महत्वाकांक्षी परियोजना को दो चरणों में पूरा किया गया। प्रथम चरण में पुल के मध्य स्थित 6 स्पैनों के गर्डरों का प्रतिस्थापन किया गया, जबकि द्वितीय चरण में शेष 2 एंड स्पैनों का कार्य सफलतापूर्वक पूरा किया गया। संपूर्ण परियोजना मात्र एक वर्ष की अवधि में पूर्ण की गई तथा इसके लिए कुल 8 मेगा ब्लॉक लिए गए, जिनमें प्रत्येक ब्लॉक की अवधि लगभग साढ़े पाँच घंटे रही।

पश्चिम रेलवे-भावनगर मण्डल

33 KV ओवरहेड पावर लाइन में संशोधन

नि.सू.सं. डीआरएम/ईएल/ईनि/बीवीपी/2026-27/01 दि. 02.06.2026; ई-निविदा आमंत्रित सूचना; भारत के राष्ट्रपति की ओर से और उनके लिए मंडल रेल प्रबंधक (कर्षण वितरण), पश्चिम रेलवे, भावनगर परा द्वारा निम्नलिखित कार्यों के लिए खुली निविदा आमंत्रित की जाती है, **निविदा संख्या: 17-TRD BVP-2025-26-R; कार्य का नाम:** लालपुर - गोप जाम अनुभाग में अंडरग्राउंड के माध्यम से 4 स्थानों पर 33 KV ओवरहेड पावर लाइन क्रॉसिंग में संशोधन; **अनुबंध मूल्य:** ₹ 6,29,26,693.52/-; **टेंडर फीस:** NIL; **बयाना राशि:** ₹ 12,58,500/-; **ऐड्रेस:** डीआरएम (ट्रैक्शन) बीवीपी, डीआरएम कार्यालय, भावनगर परा - 364 003; निविदाकर्ताओ को अपनी निविदा ऑन लाईन लिंक www.ireps.gov.in पर जमा करना है. **अधिक जानकारी के लिए वेबसाईट www.ireps.gov.in पर जाएें. ऑनलाईन निविदा भरने की अंतिम तिथि दिनांक 23.06.2026 को 15.00 बजे तक है.** BVP – 049

हमें लाइक करें : facebook.com/WesternRly

अहमदाबाद मण्डल की आत्मनिर्भर पहलः तीन नए वाणिज्यिक अनुबंधों से बदलेगी सुरक्षा, सफाई और सफर की सूरत

ई-नीलामी के जरिए गैर-प्रीमियम ट्रेनों में वेंडिंग, मालिया गुड्स शेड में वैगन सफाई और वंदे भारत विज्ञापनों के लिए 3 साल के अनुबंध किए जारी

पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल के वाणिज्य विभाग ने राजस्व के नए स्रोतों को बढ़ाने और परिचालन दक्षता में सुधार की दिशा में एक बड़ा कदम उठाते हुए, 1 जून 2026 को तीन महत्वपूर्ण ई-ऑक्शन (e-auction) अनुबंधों को सफलतापूर्वक पूरा किया है। 3 वर्षों की अवधि के लिए दिए गए ये अनुबंध यात्री सुविधा, माल ढुलाई लॉजिस्टिक्स और प्रीमियम ब्रांडिंग जैसे विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े हैं, जो सामूहिक रूप से 4.47 करोड़ का गैर-किराया राजस्व (Non-Fare Revenue - NFR) प्रदान करेंगे। इन निविदाओं के माध्यम से रेलवे प्रशासन द्वारा बिना किसी पूंजीगत निवेश या परिचालन व्यय के, रेलवे खजाने में कुल 4.47 करोड़ का सीधा वित्तीय योगदान सुनिश्चित हुआ है।

1. सफर के अनुभव में बदलावः ट्रेन साइड वेंडिंग (ट्रेन के भीतर बिक्री)-(अनुबंध राजस्वः 3.72 करोड़):

गैर-प्रीमियम ट्रेनों में 'ट्रेन साइड वेंडिंग' अनुबंध का मुख्य उद्देश्य यात्रियों के लिए एक सुरक्षित, सुव्यवस्थित और सुविधाजनक व्यवस्था स्थापित करना है।

यात्रियों के लिए बेहतरीन सुविधाः यात्रियों को अब सफर के दौरान अपनी सीट पर ही आवश्यक दैनिक सामान आसानी से मिल सकेगा। इसमें टूथपेस्ट, टूथब्रश, टिश्यू, सैनिटरी पैड, डायपर, समाचार पत्र, पत्रिकाएं, मोबाइल चार्जर, ईयरफोन और खिलौने जैसी वस्तुएं शामिल होंगी।

यात्री हितों की सुरक्षाः यात्रियों से अधिक वसूली को रोकने के लिए सभी उत्पादों को अनिवार्य रूप से अधिकतम खुदरा मूल्य (MRP) पर बेचा जाएगा। इसके साथ ही बिल/रसीद देना अनिवार्य होगा और किसी भी एक्सपायर्ड या अनधिकृत उत्पाद की बिक्री पर पूरी तरह प्रतिबंध रहेगा।

बेहतर सुरक्षा व्यवस्थाः अनधिकृत फेरीवालों (अवैध वेंडर्स) पर लगाम लगाने के लिए इस प्रणाली के तहत प्रति ट्रेन अधिकतम चार (4) वेंडर्स को ही अनुमति दी जाएगी। ये सभी वेंडर पूरी तरह सत्यापित, निर्धारित वर्दी और बैच में होंगे तथा उनके पास QR कोड आधारित पहचान पत्र होगा।

डिजिटल एकीकरणः यात्रियों को यात्रा के दौरान ऑनलाइन ऑर्डर और डिलीवरी की सुविधा भी मिलेगी, जिससे उनका यात्रा अनुभव और अधिक सुगम बनेगा।

2. बुनियादी ढांचे की मजबूतीः मालिया (MALB) गुड्स शेड में वैगन सफाई-(अनुबंध राजस्वः 0.57 करोड़):

मालिया गुड्स शेड में वैगन सफाई का यह अनुबंध एक आत्मनिर्भर मॉडल पर आधारित है, जो रेलवे की लागत को कम करते हुए कार्यस्थल की स्थिति में सुधार करता है।

रेलवे के खर्च की बचतः वैगनों और गुड्स शेड परिसर की सफाई का पूरा खर्च ठेकेदार द्वारा स्वयं वहन किया जाएगा, जिससे रेलवे के अपने सफाई खर्च में सीधी बचत होगी।

टैक और वैगन की लंबी उम्रः कोयले और अन्य अवशेष सामग्रियों की नियमित सफाई से वैगनों और ट्रैक की उम्र (लाइफस्पैन) बढ़ेगी। यह गुड्स शेड परिसर में कचरा जमा होने से भी रोकेगा, जिससे कर्मचारियों के लिए सुरक्षित कामकाजी माहौल तैयार होगा।

सस्टेनेबल कमर्शियल मॉडलः इस अनुबंध के तहत ठेकेदार को सफाई के दौरान निकलने वाले अवशेष (जैसे कोयला) को इकट्ठा कर बेचने की अनुमति होगी, जिससे यह मॉडल ठेकेदार के लिए भी आर्थिक रूप से व्यावहारिक और टिकाऊ बना रहेगा।

3. ब्रांडिंग को नया आयामः वंदे भारत हेड रेस्ट कवर पर विज्ञापन-(अनुबंध राजस्वः 0.18 करोड़):

देश की प्रीमियम सेमी-हाई-स्पीड ट्रेन वंदे भारत एक्सप्रेस की लोकप्रियता का लाभ उठाते हुए, इस अनुबंध के तहत कोच के भीतर उपलब्ध स्पेस का उपयोग ब्रांड विजिबिलिटी के लिए किया जाएगा।

आकर्षक और आधुनिक लुकः ब्रांडेड हेड रेस्ट कवर से ट्रेन के कोच के अंदर का माहौल अधिक साफ-सुथरा, एकसमान और पेशेवर दिखाई देगा, जो यात्रियों के सफर को और सुखद बनाएगा।

विज्ञापकों और रेलवे दोनों को लाभः विज्ञापनदाताओं को यात्रा के दौरान यात्रियों के एक बड़े वर्ग तक अपनी सीधी पहुंच बनाने का मौका मिलेगा। वहीं, रेलवे यात्रियों के आराम को प्रभावित किए बिना अपनी खाली संपत्तियों का सही उपयोग कर राजस्व अर्जित कर सकेगा।

ई-ऑक्शन के माध्यम से अपनाई गई यह बहुआयामी वाणिज्यिक रणनीति अहमदाबाद मंडल की आत्मनिर्भरता के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाती है। इससे रेलवे को न केवल महत्वपूर्ण गैर-किराया राजस्व प्राप्त हो रहा है, बल्कि यात्रियों की सुरक्षा, सुविधा और परिचालन स्वच्छता में भी लगातार सुधार आ रहा है।

सत्यमेव जयते
गुजरात सरकार

विकसित भारत
विकसित गुजरात

प्रगति का पर्व, प्रकृति का गर्व

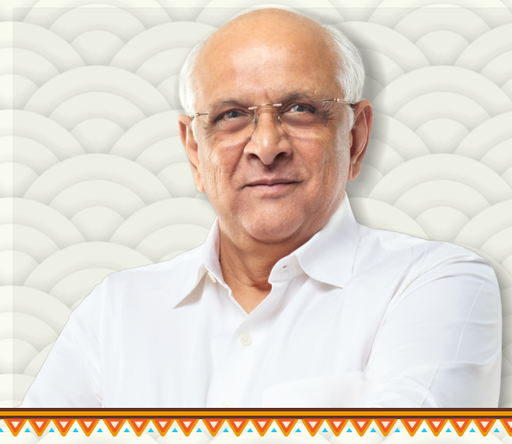

आत्मनिर्भर भारत के प्रणेता
माननीय प्रधानमंत्री
श्री नरेन्द्र मोदी के
करकमलों द्वारा
₹18,000 करोड़ से अधिक की विकास परियोजनाओं का लोकार्पण एवं शिलान्यास
तथा विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर विशेष कार्यक्रम

गरिमामय उपस्थिति

श्री भूपेन्द्रभाई पटेल
माननीय मुख्यमंत्री, गुजरात

श्री सी.आर. पाटील
माननीय केंद्रीय जल शक्ति मंत्री, भारत सरकार

श्री हर्ष संघवी
माननीय उपमुख्यमंत्री, गुजरात

कार्यक्रम की विशेषताएँ

- प्लास्टिक एवं थर्मोकॉल के उपयोग के बिना 100% सतत एवं पर्यावरण-अनुकूल डेकोरेशन
- सूरत के फाइन आर्ट्स के प्राध्यापकों एवं विद्यार्थियों द्वारा रीसाइकल कपड़ों से निर्मित भव्य स्टेज बैकड्रॉप
- पर्यावरण संरक्षण का संदेश देती ५००० से अधिक नागरिकों की कलाकृतियों के साथ हैण्ड-पेन्टेड होर्डिंग्स एवं पैनलों का समावेश
- आदिवासी कलाकारों द्वारा निर्मित पारंपरिक बाँस आधारित विविध इंस्टॉलेशंस
- "वेस्ट टू बेस्ट" संकल्पना के अंतर्गत रिसाइकल सामग्री से निर्मित आकर्षक शिल्पकृतियाँ
- भारतीय संस्कृति की गरिमा को अभिव्यक्त करती इको-फ्रेण्डली रंगोली

- भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण के 6 विकासोन्मुख परियोजनाओं का लोकार्पण एवं शिलान्यास
- ऊर्जा एवं पेट्रोकेमिकल्स विभाग की 4 विकास परियोजनाओं का लोकार्पण
- गुजरात औद्योगिक विकास निगम की 8 विकास परियोजनाओं का लोकार्पण
- भारत सरकार के श्रम एवं रोजगार मंत्रालय अंतर्गत कर्मचारी राज्य बीमा निगम की विकास परियोजना का लोकार्पण
- शहरी विकास एवं शहरी गृह निर्माण विभाग की 2 विकास परियोजनाओं का लोकार्पण
- मार्ग एवं भवन विभाग की विकास परियोजनाओं का लोकार्पण
- स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग की विकास परियोजना का लोकार्पण
- पंचायत, ग्रामीण गृह निर्माण एवं ग्रामीण विकास विभाग अंतर्गत जिला पंचायत डांग-आहवा के नवनिर्मित भवन का लोकार्पण

दिनांक: 05 जून, 2026 | **समय:** सायं 4:15 बजे | **स्थान:** पंडित दीनदयाल उपाध्याय इंडोर स्टेडियम, सूरत

"आदरणीय प्रधानमंत्री जी के करकमलों द्वारा ₹18,000 करोड़ के विकास प्रकल्पों की यह सौगात, गुजरात में 'प्रगति और प्रकृति' के उत्तम समन्वय के माध्यम से "विकसित गुजरात" से "विकसित भारत" के निर्माण की एक मजबूत गारंटी है।"

- श्री हर्ष संघवी, माननीय उपमुख्यमंत्री, गुजरात